"मैं कौन हूँ ?"

उत्तर प्रदेश की एक छोटी गाँव। हरियाली फैलती सुंदर पेड़ों और पौधे। शीशी की तरह की जल फैलती तालाब और खुला आसमान। इनसे भरा हुआ एक सुंदर गाँव था वह।

वहाँ एक पती और पत्नी रहते थे। पती का नाम था राम और पत्नी का नाम था वैशाली। वे उस गाँव में अच्छे से काम करके खुशी से जीते थे। पर वो दोनों एक बात पर बहुत उदास थी। क्योंकी उन दोनों को एक बच्चा नहीं था। राम और वैशाली एक बच्ची के लिए बहुत इच्छा करती थी। दो साल बीते.....।
आखिर उन दोनों को वह खुशी की बात मिल गई। वैशाली और राम माँ-बाप बनने वाली है। वैशाली की एक बड़ा सपना था कि जब बच्चा बड़ा हो जाती है तब उसे अच्छे पढ़ाई दिलाकर एक बेहतर ज़िंदगी देने के लिए। वो बस इतना ही चाहता था कि अपनी बच्ची को उस खुशी भरी ज़िंदगी मिले

जो अपने - आप को नहीं मिला था।
नौ महीने बीते .....।
राम और वैशाली को एक लड़की पैदा हुई। उन्होंने बच्ची को 'तारा' नाम दिया। क्योंकी यह बच्चा उन दोनों के ज़िंदगी के चमकीला उम्मीद था। तारा के आने से वह दोनों बहुत खुश हुए।
चार साल बीते .....।
तारा के माँ - बाप ने उसे पढ़ाई के लिए गाँव की एक "स्कूल" में भेजा। तारा अच्छे से पढ़ाई करते थे और गाना भी गाते थे। इस बात पर तारा की माँ - बाप बहुत खुश थे।
सालों बीते .....।
तारा अच्छे से अपनी "स्कूल" की पढ़ाई पूरी की। और "एन्जनियरिंग" पढ़ने के लिए गाँव के बाहर एक शहर में जा रहा था। वहाँ भी तारा अच्छे से पढ़ाई की और उसकी पसंदीदा काम उसे मिली। तारा रोज़ सुबह सात बजे को गाँव से निकलकर शहर में नौ बजे को पहूँचती थी और वापस रात को आठ बजे को घर लौटती थी। एक दिन जब तारा काम के बाद वापस घर जाने के लिए

बस की इंतज़ार करके "बस स्टोप" में रुका था तो अचानक से एक आदमी आकर उससे अजीब तरीके की बातें करना शुरू की और उसे छूने की भी कोशिश की। डरकर तारा वहाँ से भागा पर वहाँ उसकी मदद के लिए वहाँ कोई भी नहीं था। पर उस बूरा आदमी ने तारा को पकड़ लिया और उससे बहुत बूरी तरह इस्तमाल किया। वहाँ से किसी तरह तारा रोते - रोते घर वापस आया। उस शैतान की वजह से तारा कुछ महीने "ऑफिस" नहीं गई। वो डरकर घर पर ही रहा। पर एक दिन अचानक से उसे एक हिम्मत आया। तारा फिर से "ऑफिस" में जाना और काम करना शुरू किया। और कुछ ही महीने के बाद तारा की शादी हुई। शादी के बाद तारा उत्तर प्रदेश से दिल्ली में आकर रहना शुरू किया। और तारा उस बूरी आदमी को नियम के सामने ले आकर उसे उचित सज़ा देने के लिए लड़ना शुरू किया। पर वह आदमी बहुत अमीर था साथ - साथ देश की "अधिकारियों" से भी वह बहुत अच्छी रिश्ता रखती थी। फिर भी तारा हार नहीं मानी।

तारा अपनी नीती के लिए खुद आवाज़ ~~उठासी~~ बड़ाई। इसके बीच तारा एक बच्ची की माँ भी बनी। तारा अपनी माँ-बाप की देख भाल कर रही है। अपनी पती के लिए जो कुछ भी देना वह सब दे रही है। अपनी बेटी की देखभाल कर रही है। घर की सारी काम खुद कर रही है। "ऑफिस" की भारी काम कर रही है। अपनी नीती के लिए और अपनी जैसी करोड़ों "अतिजीविताओं" के लिए लड़ रही है। वह एक माँ है, पत्नी है, बेटी है, काम करकर पैसा कमाती औरत है। और उसका अलावा 'एक अतिजीविता' है। इतने साल से लड़ने पर भी कोयी फायदा नहीं मिला। इस बात पर बेहद उदास होकर तारा ने अपनी ज़िंदगी खत्म कर दी। ज़िंदगी की अंत में तारा अपने-आप से पूछा होगा की, "मैं कौन हूँ?"। वो एक साधारण औरत नहीं था। वे अपनी ज़िंदगी में सभी के लिए भी तारा सबकुछ किया। पर उसने अपने के लिए क्या पाया? काम करती थी पर लेकिन उससे सब कुछ ~~होता~~ जाता है? तारा हमारे सामाजिक में रहते कई औरतों की एक "प्रतिनिधी" है जो अपने आप के अलावा बाकी सब लोगों के

लिए अपनी ज़िंदगी जीकर मरती हैं। उन ~~न~~ सभी औरतों की ~~मन~~ मन की एक बड़ी सवाल है कि, "मैं कौन हूँ?"। जो अपने आप के लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए ~~जी~~ अपनी ज़िंदगी जीती है।